राष्ट्रीय आंदोलन के राजनीतिक कैदियों का कारागार जीवन (1912 ई० - 1947ई०) : एक ऐतिहासिक अध्ययन, बिहार के विशेष संदर्भ में

पीएच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रबंध की रूपरेखा

(सामाजिक विज्ञान संकाय)

विश्वविद्यालय इतिहास विभाग

रांची विश्वविद्यालय, रांची

शोध निर्देशिका :

डॉ. अमृता दत्ता

विभागाध्यक्ष & सहायक प्राध्यापिका

योगदा सत्संग महाविद्यालय.

रांची विश्वविद्यालय, रांची

शोधार्थी :

गुलशन कुमार

यूजीसी – नेट, जे०आर०एफ

रांची विश्वविद्यालय, रांची

राष्ट्रीय आंदोलन के राजनीतिक कैदियों का कारागार जीवन
(1912ई० - 1947ई०):
एक ऐतिहासिक अध्ययन, बिहार के विशेष संदर्भ में

1.विषय का परिचय

राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान राजनीतिक कैदियों का जीवन भारत के स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण पहलू रहा है। इसमें ब्रिटिश सरकार ने राजनीतिक कार्यकर्ताओं स्वतंत्रता सेनानियों और क्रांतिकारियों को दबाने और आंदोलन को कमजोर करने के लिए बहुत कठोर दमनकारी नीतियों को अपनाया। जिसमें जेल जीवन की यातानाएँ प्रमुख थे। बिहार में स्वतंत्रता सेनानियों ने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ न केवल आंदोलन किया बल्कि उन्होंने जेल में भी संघर्ष और त्याग का उदाहरण पेश किया।

कैदियों के लिए भारत में कई कुख्यात स्थान थे, जिनमें बिहार के पटना सेंट्रल जेल, भागलपुर सेंट्रल जेल, मुजफ्फरपुर जेल, हजारीबाग जेल, बांका जेल, बक्सर जेल आदि प्रमुख स्थान थे। इन जेल में कैदियों का जीवन बहुत कठिन था। उन्हें अपर्याप्त भोजन, चिकित्सा सुविधाओं में कमी तथा कठोर श्रम का सामना करना पड़ता था। इनमें बिहार के कुछ प्रमुख राष्ट्रीय आंदोलन के कैदी जैसे राजेंद्र प्रसाद(हजारीबाग जेल), राम विनोद सिंह (भागलपुर जेल),जयप्रकाश नारायण(हजारीबाग जेल), जगत नारायण लाल(बक्सर जेल,सालीग्राम सिंह(हज़ारीबाग जेल),बैकुंठ शुक्ल(गया जेल), जुब्बा साहनी(मुज़फ़्फ़रपुर जेल), योगेंद्र शुक्ल(बक्सर जेल)आदि प्रमुख थे।

बिहार के कुछ प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों की जेल यात्रा:-

जयप्रकाश नारायण:- सर्वप्रथम इन्हें सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान सितंबर 1932 ई० में मद्रास से गिरफ्तार करनासिक जेल भेज दिया गया यहां उनकी मुलाकात मीनू मसानी, अच्युत पटवर्धन, अशोक मेहता,आदि जैसे उत्साहित कांग्रेस नेताओं से हुई।

जेल में उनके द्वारा की गई चर्चाओं ने कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी को जन्म दिया। भारत छोड़ो आंदोलन के समय ये हजारीबाग जेल में बंद थे, आंदोलन को भूमिगत संचालन करने की योजना बनाकर अपने छः साथियों के साथ 9 अक्टूबर 1942 को जेल से भाग निकले। इन्हें मुंबई का आर्थर जेल, दिल्ली के कैंप जेल, तथा आगरा जेल में भी रखा गया था।

राजेन्द्र प्रसाद :- डॉ० वी० वीरोत्तम की पुस्तक झारखंड दिग्दर्शन के अनुसार राजेंद्र प्रसाद को 11 जनवरी 1932 से 24 जून 1932 तक (6माह) दूसरी बार 22 1933 से 7 सितंबर 1933 तक (8माह) तथा तीसरी बार 28 जनवरी 1944 से 1 दिसंबर 1944 तक(11माह) हजारीबाग जेल में रखा गया था। जेल में उनका अधिकांश समय अध्ययन, सूत कातने और राजनीतिक चर्चाओं में बीतता था। वे जेल में खान अब्दुल गफ्फार खान, राहुल सांकृत्यायन, जगत नारायण लाल, स्वामी सहजानंद सरस्वती समेत कई नेताओं के साथ स्वतंत्रता आंदोलन की चर्चाओं एवं योजनाओं का क्रियान्वयन किया। इन्हें पटना, बाँकीपुर जेल में भी रखा गया था।

राष्ट्रीय आंदोलन के कई कैदियों को बेड़ियों में बांधकर रखा जाता था। उन्हें जंग लगे गंदे बर्तनों में खाना दिया जाता था। नंगे शरीर पर कोड़े बरसाए जाते थे। कई कैदियों को अपने सिद्धांतों और विचारों के कारण उन्हें एकांत कारावास में रखा गया था। स्वतंत्रता सेनानियों ने अमानवीयों परिस्थितियों में रहकर भी अपने आदर्शों और संकल्प को नहीं भूलें। वे कैद में रहते हुए भी अपने संघर्षों को जारी रखा और अन्य कैदियों के साथ मिलकर विरोध प्रदर्शनों और भूख हड़तालों का आयोजन किया।

इस अवधि के दौरान बिहार के स्वतंत्रता सेनानियों का जेल जीवन उनके व्यक्तिगत यातनाओं की कहानी नहीं है, बल्कि उनके त्याग, दृढ़ता और स्वतंत्रता के प्रति उनके अटूट प्रतिबद्धता का प्रतीक है। इस शोध में हम बिहार के राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान राजनीतिक कैदियों के कारागार जीवन की प्रमुख घटनाएं, उनके बलिदान और उनके संघर्षों का अवलोकन करेंगे जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

प्रस्तावित शोध बिहार के कुछ प्रमुख सेंट्रल जेल जैसे पटना सेंट्रल जेल, मुजफ्फरपुर सेंट्रल जेल, भागलपुर सेंट्रल जेल, बक्सर सेंट्रल जेल, हजारीबाग सेंट्रल जेल तथा गया सेंट्रल जेल के राजनीतिक कैदियों के कारागार जीवन के पर आधारित होगा।

1.1 साहित्य समीक्षा

कारागार अधिनियम 1894 में जेल के नियम-कानून तथा कर्मचारियों के कर्तव्यों का वर्णन किया गया है, किंतु कैदियों के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए इसकी कोई चर्चा नहीं की गई है।

कालिकिंकर दत्त ने *बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास* के तीनों भागों में बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन के साथ-साथ जेल जानेवाले वाले सेनानियों का भी जिक्र किया हैं लेकिन सेनानियों के जेल जीवन के वर्णन की उपेक्षा की हैं।

सचिंद्र सान्याल ने *बंदी जीवन* नामक अपने इस आत्मकथा में जेल में अपने साथ हुई कठिनाइयों, बिहार में राजनीतिक गतिविधियों तथा साथी क्रांतिकारियों के साथ की गई संघर्ष का वर्णन किया है। किंतु उन्होंने अपनी इस आत्मकथा में अन्य कैदियों के साथ ब्रिटिशों के व्यवहार का जिक्र नहीं किया है।

सुशील कुमार ने *"भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बिहारी क्रांतिकारी एवं समाचार पत्रों की भूमिका"* में बिहार के क्रांतिकारियों के साथ जेल में अमानवीय व्यवहार को उजागर करने वाले समाचार पत्रों की चर्चा की है।
जवाहर लाल वर्मा ने *सम स्पेक्ट्स ऑफ़ फ्रीडम स्ट्रगल इन इंडिया विथ स्पेशल रिफरेन्स टू बक्सर डिस्ट्रिक्ट* में बक्सर जेल में बंद कैदियों का वर्णन किये हैं किन्तु अन्य जेलों के कैदीयों का वर्णन नहीं किया हैं।

जवाहरलाल वर्मा ने *हिस्ट्री ऑफ द सिक्स रिवॉल्यूशनरीज ऑफ़ बिहार एस्केप्ड फ्रॉम हजारीबाग जेल* में जयप्रकाश नारायण तथा उनके छः क्रांतिकारी साथियों के साथ हजारीबाग जेल से भागने का वर्णन किया है, परंतु उन्होंने जेल के अन्य कैदियों का जो ब्रिटिशों को खिलाफ लड़ रहे थे उनका वर्णन नहीं किया।
जवाहरलाल वर्मा ने *हिस्ट्री ऑफ द काला पानी रिटर्न रिवॉल्यूशनरी लीडर ऑफ बिहार* में अंडमान निकोबार जेल से सजा काटकर आने वाले बिहार के कैदियों की चर्चा की है। परंतु उनपर हुए अत्याचारों का वर्णन नगन्य हैं।

1.2 शोध रिक्ति

कैदियों के करागार जीवन से संबंधित कई अध्ययन मौजूद हैं।हालांकि मौजूदा अध्ययन अक्सर इन कैदियों के व्यक्ति के जीवन और स्वतंत्रता आंदोलन में उनके भागीदारी पर प्रकाश डालते हैं,लेकिन इन क्षेत्रों में ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा राष्ट्रीय आंदोलन के कैदियों के साथ कैसा व्यवहार किया गया था, इस पर सीमित अध्ययन किया गया है जिस पर व्यापक दृष्टि डालने की आवश्यकता है। इन कैदियों के रणनीतियों को जेल ने कैसे आकर दिया इस पर भी सूक्ष्म रूप से प्रकाश डाला गया है, इसे वृहत परिपेक्ष्य में देखे जाने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त ब्रिटिश सरकार द्वारा बनाए गए नियम कानूनों ने कैदियों के जीवन संबंधित क्या-क्या उपबंध किए थे इस पर भी सीमित ऐतिहासिक अन्वेंशन किए गए हैं जिस पर भी विस्तृत कार्य करने की आवश्यकता है।

1.3 समस्या का कथन

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान बिहार के जेल महत्वपूर्ण कारागार के रूप में उभरा, जहाँ स्वतंत्रता सेनानियों को कैद किया गया था। इन कैदीयों ने न केवल राष्ट्र के प्रति अपने अटूट समर्पण का प्रदर्शन किया बल्कि जेल के भीतर भी अपनी गतिविधियों

के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन को प्रोत्साहित किया। यह अध्ययन उन प्रमुख राजनीतिक कैदीयों के कारागार जीवन का विश्लेषण करने का प्रयास करता है जो बिहार के जेलों के बंदी रहे थे। इस समस्या के समाधान के लिए “राष्ट्रीय आंदोलन के राजनीतिक कैदियों का कारागार जीवन (1912-1947) एक ऐतिहासिक अध्ययन बिहार के विशेष संदर्भ में ” का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है जिससे उनके संघर्ष प्रेरणा और योगदान को सही परिप्रेक्ष्य में समझा जा सके।

1.4 शोध के उद्देश्य

- बिहार के कारागार में कैदियों के साथ ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा किए गए व्यवहार एवं सजा का विश्लेषण करना।
- ब्रिटिश सरकार द्वारा कैदियों के लिए बनाए गए अधिनियमों का अवलोकन करना।
- कैदियों का जेल में रहते हुए उनके दैनिक दिनचर्या और जीवन स्थितियों का दस्तावेजीकरण करना।
- कैद में बंद नेताओं की राजनीतिक विचारधारा और रणनीतियों को आकार देने में जेल के अनुभव की जांच करना।

1.5 शोध की परिकल्पना

- बिहार के जेलों में कैदियों को प्रताड़ना, अमानवीय व्यवहार और कठोर परिश्रम का सामना करना पड़ता था।
- ब्रिटिश सरकार द्वारा राष्ट्रीय आंदोलन के कैदियों के लिए बहुत ही कठोर कानून बनाए गए थे।
- बिहार के कारागार में स्वतंत्रता सेनानियों का जीवन काफी संघर्षपूर्ण एवं कष्टकारी था।
- राजनीतिक विचारकों और नेताओं के बीच जेल में उनके विचारों का आदान-प्रदान हुआ जिसने स्वतंत्रता संग्राम की दिशा और विचारधारा को विकसित किया।

2.शोध प्रारूप

2.1 शोध विधि

प्रस्तावित शोध में राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान कैदियों के जीवन के लिए प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों के द्वारा आंकड़ों का संकलन किया जाएगा। इस अध्ययन में मिश्रित अनुसंधान विधि का प्रयोग कर ऐतिहासिक शोध डिजाइन का उपयोग करते हुए डाटा एकत्रित किया जाएगा। व्यापक साहित्य समीक्षा जिसमें शैक्षणिक कार्य, ऐतिहासिक दस्तावेज और अभिलेख के सामग्री शामिल होंगे।अभिलेख के प्राथमिक स्रोतों का एकत्रित करने के लिए सरकारी-गैरसरकारी, अभिलेखागार तथा विभिन्न जेलों का भ्रमण कर अवलोकन किया जाएगा। औपनिवेशिक कालीन कैदियों के परिवारों, स्वतंत्रता आंदोलन के विशेषज्ञों तथा इस विषय से संबंधित लोगों का मौखिक साक्षात्कार किया जाएगा। डेटा एकत्रण से प्राप्त जानकारी का मूल्यांकन सभी विधियों गुणात्मक, मात्रात्मक, प्रयोगात्मक तथा वैज्ञानिकता के आधार पर किया जाएगा। शोध को नैतिक रूप से दक्ष बनाने के लिए सूचनाओं को सहमति से प्राप्त करना, गोपनीयता बनाए रखना तथा सांस्कृतिक संवेदनशीलता का ध्यान रखा जाएगा।

2.2 डाटा संग्रहण हेतु उपकरण एवं तकनीक

कृत्रिम बौद्धिकता के युग में अब कई दस्तावेज ऑनलाइन उपलब्ध हो गए हैं यह काफी आसानी से प्राप्त हो जाती है जो दूरस्थ पहुंच के लिए डिजिटल संग्रहण को मूल्यवान बनाते हैं। विभिन्न संग्रहालयों, पुस्तकालयों तथा अभिलेखागारों का दौरा करके प्राथमिक एवं द्वितीय डाटा प्राप्त किया जाएगा। कैदियों के आज के परिवारों और इस विषय से संबंधित विशेषज्ञों से साक्षात्कार कर उनके कैदियों के प्रति विचारों धारणाओं तथा सलाह का मात्रात्मक डाटा एकत्र करने के लिए सर्वेक्षण डिजाइन को नियोजित कर प्राप्त आंकड़ों का तुलनात्मक अध्ययन करके उनका मूल्यांकन किया जाएगा। घटनाओं को कालानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित करने और पैटर्न का रुझानों को पहचान करने के

लिए समय रेखा को भी शामिल किया जाएगा। शोध क्षमताओं को बढ़ाने के लिए विश्लेषण, विजुलाइजेशन और ऐतिहासिक मानचित्र के डिजिटल उपकरणों को भी प्रयोग में लाया जाएगा।

2.3 आंकड़ों का विश्लेषण

प्राथमिक और द्वितीय स्रोतों की वैधता, विश्वसनीयता, सटीकता, पूर्वाग्रह और आकलन करने के लिए लेखन के दृष्टिकोण उद्देश्य और संभावित सीमाओं पर विचार किया जाएगा। समानताओं और विसंगतियों की पहचान करने के लिए ऐतिहासिक स्रोतों से प्राप्त जानकारी की तुलना की जाएगी। आंकड़ों के वस्तुनिष्ठ व्याख्या के लिए आलोचनात्मक चिंतन में मान्यताओं पर प्रश्न, व्याख्याओं को चुनौती और ऐतिहासिक आख्यानों के जटिलता को पहचानने की कोशिश भी शामिल हैं। सर्वेक्षण विधि से प्राप्त तथ्यों, आंकड़ों से जुड़े ऐतिहासिक संदर्भ को समझने के लिए हम उन राजनीतिक,सामाजिक,आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों का विश्लेषण करेंगे जो घटनाओं या दृष्टिकोणों को प्रभावित कर सकते हैं।

3. शोध का महत्व

बिहार में राष्ट्रीय आंदोलन के राजनीतिक कैदियों का कारागार जीवन एक महत्वपूर्ण अध्ययन का विषय है जो इतिहास, राजनीति विज्ञान एवं समाजशास्त्र के कई पहलुओं को उजागर करता हैं। इस अवधि में कई महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएं जैसे की स्वतंत्रता आंदोलन ,विश्व युद्ध हुई। इन घटनाओं से कई परिवर्तन हुए जो की इन कैदियों की स्थिति और उनके साथ किए गए व्यवहार का अध्ययन राजनीतिक परिवर्तनों में गहरी समझ प्रदान करती है। उनके संघर्ष बलिदान की कहानी समाज के विभिन्न वर्गों को प्रेरित करती है तथा सामाजिक जागरूकता उत्पन्न करती है। प्रस्तुत शोध में इन कैदियों का अध्ययन मानवाधिकार के मुद्दे को भी उजागर करते हैं। कैदियों के साथ किया गया

अत्याचारों और उनके अधिकारों का उल्लंघन मानवाधिकार आंदोलन के लिए महत्वपूर्ण सबक प्रदान करती है। साथ ही अपने देश के प्रति संघर्ष की भावना जागृत करती हैं ।

4. वर्तमान समय में विषय की प्रासंगिकता एवं आवश्यकता

वर्तमान समय में यह शोध काफी महत्वपूर्ण है राष्ट्रीय आंदोलन के कैदियों साथ किए गए व्यवहार यह दिखाता है कि कैसे सत्ता का दुरुपयोग किया गया था। इसके अध्ययन से मानवाधिकारों की रक्षा के लिए सबक लिया जा सकता है। यह शोध शैक्षिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है, इतिहास के छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए यह जानना आवश्यक है कि कैसे स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष जेल में बिताए और किस प्रकार उनके अनुभवों ने राष्ट्र निर्माण में योगदान दिया। यह अध्ययन समकालीन कैदियों की स्थिति को समझने में मदद कर सकता है। यह दिखाता है कि कैसे राजनीतिक संघर्ष और दमन के तरीके समय के साथ बदलते हैं और उनकी स्थिरता भी देखे जा सकती हैं।उस समय के कैदियों द्वारा अपने देश को ब्रिटिशों से आजाद करने के लिए जो संघर्ष, बलिदान और यातनाएं को झेला वह आज के लोगों में देशभक्ति की भावना जगाती है।

5. वर्तमान ज्ञान में योगदान

राष्ट्रीय आंदोलन भारतीय इतिहास का महत्वपूर्ण हिस्सा है और इसके अध्ययन से वर्तमान ज्ञान में कई महत्वपूर्ण योगदान मिलते हैं। यह अध्ययन हमें स्वतंत्रता आंदोलन के विभिन्न पहलुओं को समझने मदद करता है। इससे पता चलता है कि कैसे स्वतंत्रता सेनानियों ने जेल में रहते हुए ब्रिटिशों के विरुद्ध आंदोलन को संगठित कर जारी किया। उनके बलिदान और संघर्ष का मूल्य समझ में आता है जो अभी भी काफी प्रेरणादायक है। कैदियों के साथ क्रूर व्यवहारों तथा मानवाधिकार के उल्लंघन का स्पष्ट उदाहरण मिलता है जिससे पता चलता है कि ब्रिटिश शासन कितना क्रूर और दमनकारी था तथा इसका भारतीय समाज एवं संस्कृति पर क्या प्रभाव पड़ा। जेल में रहकर भी उन्होंने अपने विचार और दर्शन का लेखन किया जो आज भी भारतीय राजनीति तथा समाज पर प्रभाव

डालते हैं। कैदियों के आदर्श और बलिदान ने भारतीय संविधान और लोकतांत्रिक मूल्य को प्रभावित किया। इन कैदियों के बलिदानों और संघर्षों से हमें सीख मिलती है कि अगर मानवता,अधिकार, समाज और देश के लिए कुछ करने का जज्बा हो तो विकट से विकट परिस्थितियों को भी पार किया जा सकता हैं। राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान कैदियों का कारागार जीवन वर्तमान ज्ञान में ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में समृद्ध बनाता है तथा राजनीतिक, सामाजिक और संस्कृति संदर्भों को समझने में मदद करता है।

6. भविष्य के लिए कार्य

राष्ट्रीय आंदोलन के कैदियों के जीवन से संबंधित शोध कार्य पूरी तरह संपादित होने के बाद परिणामस्वरुप बंदीग्रहध्यक्षों, संविधान विशेषज्ञों, नीति निर्माताओं, कानूनविदों, न्यायविदों को भी की एक नई अंतर्दृष्टि प्राप्त होगी। यह शोध बंदीग्रहध्यक्षों को कैदियों के साथ उचित व्यवहार करके उन्हें सुधारने के लिए प्रेरित करेगा। नीति निर्माताओं को नियम बनाने में सहायक सिद्ध हो सकेगा। इस शोध से राष्ट्रवाद को बढ़ावा मिलेगा। कैदियों का देश के लिए किए गए संघर्ष को उजागर करेगा। जिसके फलस्वरुप यह शोध लोगों को देश-प्रेम, देशसेवा, देशभक्ति के प्रति जागरूक करेगा। भविष्य में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, कैदियों तथा जेलों से संबंधित विषय पर शोध करने वाले शोध छात्रों के लिए मार्गदर्शन के रूप में कार्य करेगा एवं पाठकों के लिए भी काफी ज्ञानवर्धक साबित होगा।

7. प्रस्तावित अध्याय

भूमिका

प्रथम अध्याय :- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।

द्वितीय अध्याय :- बिहार के जेलों के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों की सजा एवं उनके साथ किए गए व्यवहार।

तृतीय अध्याय :- ब्रिटिश सरकार द्वारा राजनीतिक कैदीयों लिए बनाए गए नियम एवं क़ानून।

चतुर्थ अध्याय :- कारागार के स्वतंत्रता सेनानियों का दैनिक जीवन एवं व्यक्तिगत अनुभव।

पंचम अध्याय :- कारागार काल के दौरान राजनीतिक कैदीयों की वैचारिक गतिविधि।

निष्कर्ष

संदर्भ ग्रंथ सूची

परिशिष्ट

संदर्भ

बिहार एवं बंगाल के राष्ट्रीय आंदोलन के कैदियों के कारागार जीवन के विषय से सम्बन्धित निम्न स्रोतों का उपयोग किया जा सकता है।

प्राथमिक स्रोत

सरकारी दस्तावेज और रिपोर्ट्स

व्यक्तिगत डायरी एवं पत्र

आत्मकथाएं

समकालीन फोटोग्राफ्स

मौखिक इतिहास

द्वितीय स्रोत

ऐतिहासिक डाटाबेस

शैक्षणिक पत्रिकाएं

सरकारी प्रकाशन

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आजाद, अब्दुल कलाम, 2019, आजादी की कहानी, ओरिएंट ब्लैकस्वांन प्राइवेट लिमिटेड , हैदराबाद

2. सिंह, भीम,2023,भारत के 75 महान क्रांतिकारी (1865-1945),स्वत्व प्रकाशन, पटना

3. चौहान, भावना, 2018, भारत का राष्ट्रीय आंदोलन एक विहंगावलोकन, ज्ञान सदन पब्लिकेशन, इलाहाबाद

4.नारायण, जयप्रकाश,1975, मेरी जेल डायरी, राजपाल एंड सन्स पब्लिकेशन, दिल्ली

5. फरिया, बी. एल., 2013, आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा

6. मुखर्जी, रुद्रांशु, 2020, नेहरू बनाम सुभाष, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली

7. वर्मा, जवाहरलाल, 2017, हिस्ट्री ऑफ़ द सिक्स रिवॉल्यूशनरीज ऑफ़ बिहार एस्केप्ड फ्रॉम दी हजारीबाग जेल, जानकी प्रकाशन, पटना
8. वर्मा जवाहरलाल 2022 हिस्ट्री ऑफ द काला पानी रिटर्न्ड रिवॉल्यूशनरी लीडर ऑफ बिहार, जानकी प्रकाशन, पटना
9. कुमार, सुशील,2018, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बिहारी क्रांतिकारी एवं समाचार पत्रों की भूमिका, इंटरनेशनल जर्नल
10. सान्याल, सचिंद्रनाथ, 1963, बंदी जीवन, आत्माराम एंड संस प्रकाशन, दिल्ली
11. कुमार, सुनील, 2017, बिहार के क्रांतिकारी देश भक्तों की गौरव-गाथा:- एक समग्र अध्ययन इंटरनेशनल जर्नल,वॉल्यूम 5
12. श्रीवास्तव, निरंकार, 2021, कारागार एवं बंदी जीवन, इवेंसपब पब्लिकेशन, नई दिल्ली
13. आत्मकथा, अमर क्रांतिकारी खुदीराम बोस, 2019, नई दिल्ली
14. आत्मकथा, डॉ ० राजेन्द्र प्रसाद, 2017,प्रभात प्रकाशन, दिल्ली